आज आवश्यकता शक्तिशाली संकल्पों की

विश्व हमारी तरफ नज़र उठाए देख रहा है, लेकिन हम शायद ऐसे नज़रें दिखाने को आतुर नहीं हैं। दिखावा आज की ज़रूरत नहीं है, दिल से पुरूषार्थ करने की नितान्त आवश्यकता है। हम सभी उसी दौर में चल रहे, सबकुछ अभी भी साधारण ही है, साधारण बोल, कर्म, और संकल्प भी, तो क्यों ना कुछ अलग करें...

आज शक्तिशाली संकल्प की आवश्यकता है। जिसका सहयोग विश्व को सुरक्षित करेगा। हमारे प्रजापिता पिता श्री ब्रह्मा बाबा के संकल्पों से ही हम आगे बढ़ रहे हैं। उन्हों का श्रेष्ठ संकल्प ही हमें ऐसे स्थान पर लाया, परमात्मा से शक्ति लेने का आधार बना। तो क्या हम कुछ बेहतर नहीं कर सकते? सभी आज दुनिया में अन्य तरह से सहयोग कर पाते हैं, लेकिन किसी को कहो कि आप थोड़ा बैठकर अच्छे संकल्पों का दान करें तो उनके पास टाइम नहीं होता। किसी को वाणी से कुछ समझा देना एक अलग चीज़ है। लेकिन श्रेष्ठ संकल्प करना, पूरे विश्व को एक जैसा सहयोग देना। हमारी तरंगें जब उनके पास पहुंचती तो बहुत बड़ा परिवर्तन होता। लेकिन परिवर्तन करने के लिए संकल्पों को इकट्ठा करना अति आवश्यक है। उदाहरण, जैसे सूरज की किरणों को इकट्ठा कर उससे अन्य कार्यों को अंजाम देते हैं। आज व्यर्थ हमारा इतना चलता है कि संकल्पों में बल नहीं है। छोटी-छोटी बातों का व्यर्थ संकल्प इतना है कि हमारी शक्ति नष्ट होती ही जा रही है। अगर हमें दूसरों के अन्दर शक्ति भरनी है, तो संकल्प का बल तो चाहिए ना! वाणी से हिम्मत आती तो है सबके अन्दर, लेकिन सदा काल नहीं रहती। वाणी के साथ-साथ श्रेष्ठ संकल्प की सूक्ष्म शक्ति हो, तो हमें सफलता अधिक से अधिक मिलती है। जितनी जो सूक्ष्म चीज़ है वो हमें ज़्यादा से ज़्यादा सफलता दिखाती है।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

उदाहरण, जैसे हाइड्रोजन बम या परमाणु बम जब ब्लास्ट करना होता है तो उसमें न्यूट्रोन के सबसे सूक्ष्म कण डाले जाते हैं। उसी प्रकार से किसी भी स्थूल कार्य की शुरुआत सूक्ष्म संकल्पों से होती है। उदाहरण, जैसे मुझे कल किसी को सामान पहुंचाना है, तो हम उसकी प्लानिंग एक दिन पहले रात को करते हैं और सोचते हैं कि कल सुबह उठके मुझे यह वाला काम करना है। इससे क्या सिद्ध होता है, कि सबसे पहले हमने संकल्प सूक्ष्म में किया और उसका परिणाम एक दिन बाद निकला। अब यह भी तो हम काम कर रहे हैं अपने शरीर के लिए।

वाणी से संकल्प सूक्ष्म होते हैं। जैसे इंजेक्शन के द्वारा शक्ति भर देते हैं, ऐसे एक संकल्प इंजेक्शन का कार्य करता है, जो अन्दर हमारी वृत्ति में शक्ति भर देता है। अब आप सोचो कि इतना सारा प्रकृति का परिवर्तन करना है, तमोगुणी संस्कारों को बदलना है। उसके लिए कितनी शक्ति की ज़रूरत है अगर हमें इतना विशाल कार्य करना है तो! इसलिए यह वर्ष परिवर्तन काल के वर्ष के रूप में क्यों न मनाएं। अभी अलबेले बनके चलने का समय नहीं रहा, अब हमको सच में नॉलेजफुल बन आगे बढ़ते जाना है। बढ़ेगी वही जो बहुत काल की शक्तिशाली आत्मा होगी, जिसके संकल्पों में श्रेष्ठता होगी। इसलिए शुद्ध संकल्पों की शक्ति का स्टॉक बहुत जमा करने की आवश्यकता है। आप इस शक्ति को जितना अनुभव में लाते जायेंगे उतनी आपकी सेवा भी फलीभूत होगी।

हम सभी को इस आधार से आगे बढ़ने का प्रयास करना है और इस नये वर्ष में श्रेष्ठ संकल्प लेने का संकल्प करना है और कुछ ऐसा करके दिखाना है जिससे परमात्मा हमसे पूरी तरह से सन्तुष्ट हो जाएं और इस विश्व के महान कार्य में हम सहयोगी बन जाएं। इन्हीं शुभ विचारों से खुद को भरें।

दबाव में सजग रहकर फैसले लेना सीखें

किसी काम को करते समय, कोई निर्णय लेते वक्त यदि आप बहुत दबाव में आ जाएं तब क्या किया जाए? दबाव के साथ ही काम करते रहें और लगातार दबाव बना रहा तो वह तनाव में बदल जाता है और लगातार तनाव डिप्रेशन में पटक सकता है।

इस स्थिति से पहले ही चरण में मुक्ति पा लीजिए। जैसे ही दबाव आए, थोड़ा रुककर, आपकी जो सोचने समझने की प्रक्रिया चल रही होगी, उसको पांच चरण में बांट दें। चार तो स्पष्ट चरण होंगे और पांचवें में आपको क्रियान्वित करना होगा।

पहला चरण होगा सोच- इसमें चिंता झलकती है, एक फिक्र उतर आती है,, कभी कभी पछतावा भी होता है। दूसरा होता है विचार- इसमें हम हमारे शब्दों की जांच पड़ताल करने लगते हैं। फिर जब इन दोनों को क्रॉस करते हैं तो चिंतन शुरू हो जाता है। इसमें एक फिलॉसफी होती है। आप थोड़े परिपक्व हो चुके होते हैं और यहीं से स्वयं को राय देते हैं तथा दूसरों की सलाह लेने लगते हैं।

तो सोच, विचार, चिंतन और राय...थोड़ा सा दूर खड़े होकर इन चारो को देखना और उसके बाद करिएगा मंथन। किसी नवीन तत्व को खोजने के लिए जो परिश्रम किया जाता है वह मंथन है।

जब इन चारो का मंथन करेंगे तो आपके हाथ एक समाधान लगेगा जो कह रहा होगा कि सबसे पहले दबाव से मुक्त हों। जो होना है, वह होकर रहेगा, लेकिन उसके लिए परिश्रम नहीं छोड़ना है।

एक मस्ती, एक बेफिकरी रखो और पूरी सजगता के साथ निर्णय ले डालो। यह होगा मंथन का परिणाम और यहीं से आप दबावमुक्त हो जाएंगे।

उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन को बदल दें

परमात्म वरदानों से अपना सबकुछ सफल कर उनके समान बनो

प्रश्न : बाबा अपने महावाक्यों में कहते हैं कि अपने श्रेष्ठ भाग्य को स्मृति में रखो तो सदा खुश रहेंगे। हम ब्रह्मावत्सों का सर्वश्रेष्ठ भाग्य क्या है? कृपया विस्तार से समझाइये।

उत्तर : हमने भगवान के पास जन्म लिया, भगवान के घर में जन्म लिया, जन्म लेते ही हम भगवान की गोद में आ गये... यहीं से शुरू होती है हमारे श्रेष्ठ भाग्य की कहानी! जैसे कोई राजा के घर जन्म ले तो उसे भाग्यवान कहेंगे, वैसे ही भगवान के घर जन्म लेने वाले श्रेष्ठ भाग्य के धनी हैं, इसे याद रखें। भगवान ही हमारी पालना कर रहे हैं, पढ़ा रहे हैं, गाइड कर रहे हैं। लोग मुक्ति के लिए क्या-क्या तपस्या करते हैं और हमारे लिए मुक्ति व जीवनमुक्ति वरदान ही बन गये। याद करें इस सर्वश्रेष्ठ भाग्य को। भगवान स्वयं हमारे लिए राजाई की सौगात ले आये हैं। हमारे साथी बन गये हैं। इससे बड़ा भाग्य और क्या हो सकता है। सद्गुरू बनकर वे हमें शक्तियां व वरदान दे रहे हैं। सोचो भगवान हमारा हो गया, वह हमारा सम्बन्धी बन गया। अपने भाग्य को देखकर खुशी में नृत्य करो, आनंदित होकर गीत गाओ।

हम ऐसी भाग्यवान आत्माएं हैं, भगवान, भाग्यविधाता स्वयं जिनके भाग्य की रेखाएं खींच रहे हैं। जो योगी हैं, जो पवित्र हैं, जो भगवान के काम आ गये, जिन्हें दिव्य बुद्धि प्राप्त हुई, जिन्हें 2500 वर्ष तक धन कमाना ही नहीं पड़ेगा। ऐसा भाग्य हमारे द्वार पर आया है। सवेरे उठकर इन्हें याद करें।

प्रश्न : बाबा ने कहा कि परमधाम में शिवबाबा के साथ जाने के लिए बाप समान सम्पन्न व सम्पूर्ण बनो। सम्पूर्ण बनने का अर्थ स्पष्ट करें।

उत्तर : जो शिवबाबा के साथ घर चलेंगे, उन्हें धर्मराजपुरी में रुकना नहीं पड़ेगा। जो यहाँ से पूर्णतया बंधनमुक्त व निर्मोही बन जायेंगे, वही बाप के साथ घर चलेंगे। सम्पन्न बनने का अर्थ है सर्व खज़ानों से भरपूर। वे खजाने हैं -ज्ञान का खज़ाना, गुणों व शक्तियों का खज़ाना, समय व श्वासों का खज़ाना, पवित्रता का खज़ाना, स्वमान का खज़ाना, खुशी का खज़ाना, पुण्य कर्म व श्रेष्ठ संकल्पों का खज़ाना तथा दुआओं का खज़ाना। इस सभी खज़ानों से स्वयं को भरपूर अनुभव करें। प्रत्येक आत्मा की सम्पूर्णता की डिग्री अलग-अलग हैं। कोई 90 डिग्री पर सम्पूर्ण हैं तो कोई 80 डिग्री पर। इस तरह नीचे वाली आत्माएं 5 से 10 डिग्री तक।

सबने अपनी शक्तियां यूज़ कर ली हैं। अब योगबल, ज्ञान बल व पवित्रता के बल से अपनी मूल स्थिति तक पहुंचना सम्पूर्ण बनना है।

प्रश्न : बाबा अपने महावाक्यों में मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर बैठो - ऐसा बहुत कहते हैं। कैसे बैठें इस सीट पर तथा इस सीट पर बैठकर शक्तियों का आह्वान कैसे करें?

उत्तर : बाबा ने देखा कि मेरी सब महानात्माएं माया से पूरी तरह हार खा चुकी हैं, इसलिए माया पर विजयी बनाने के लिए उसने अपनी शक्तियां हमें दे दीं। हम विश्वास कर लें कि सर्वशक्तिवान की शक्तियाँ मेरे पास हैं इसलिए मैं हूँ मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् सर्व परमात्म शक्तियों से सम्पन्न व शक्तियों का मालिक। सीट पर बैठना माना स्मृति स्वरूप होना, याद रखना अथवा नशे में रहना। तो हम इस तरह स्वमान में रहें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, परमात्म शक्तियां मेरे पास हैं, मैं इन शक्तियों का मालिक हूँ, ये शक्तियां मेरा श्रृंगार हैं। ये शक्तियां अब मेरी हैं। ऐसे नशे में रहने से शक्तियां जागृत रहेंगी, अन्यथा वे सुषुप्त अवस्था में रहती हैं। ये है स्वमान की सीट पर बैठना। सवेरे उठकर सकंल्प करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मेरे पास सम्पूर्ण सहनशक्ति है तो सहनशक्ति सारा दिन काम करती रहेगी। मेरे पास सम्पूर्ण निर्णय शक्ति है तो सहज ही यथार्थ निर्णय होते रहेंगे। मेरे पास सामना करने की शक्ति है तो सहज ही माया या परिस्थितियों का सामना करेंगे। इसे कहते हैं शक्तियों का आह्वान करना। इस तरह मास्टर सर्वशक्तिमान के नशे में रहकर किसी भी शक्ति का आह्वान किया जा सकता है।

प्रश्न : अमृतवेला वरदानी वेला है, परंतु हमारा यह समय साधारण बीत जाता है, कुछ सहज युक्ति हमें बताएं ताकि हम इसे आनंदित कर सकें।

उत्तर : जबकि सारा संसार सोया रहता है तब हम पर भी नींद के वायब्रेशन्स का प्रभाव रहता है। स्वयं को फ्रेश करें, चारपाई छोड़ें, घूमें फिरें, ऊपर की ओर देखें। सुंदर संकल्प करें। यह शुरुआत इस समय को सफल करेगी। आप खुशी, नशे व अपने महान कर्त्तव्यों की स्मृति के संकल्पों से स्वयं को चार्ज करें। हो सके तो दस मिनट अव्यक्तवाणी सुनें या पढ़ें। तात्पर्य यह है कि ब्रेन को जागृत करें, संकल्प करें, मैं विश्व में पद्मापदम भाग्यवान हूँ। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं पूर्वज हूँ, मेरे सकाश की संसार को बहुत-बहुत ज़रूरत है। मुझे बाबा की आशाओं को पूर्ण करना है। मैं लाइट हाऊस हूँ, ऐसे श्रेष्ठ संकल्प दस मिनट तक करें।

अमृतवेले के लिए कुछ प्लानिंग हो। रात्रि को ही ये संकल्प करके सोयें कि उठकर मुझे चार काम करने हैं। प्रथम पाँच स्वरूपों का अभ्यास (तीन बार) फिर रूहानी ड्रिल (तीनों लोकों में जाना) तीन बार, फिर बीजरूप स्थिति और फिर सकाश देनी है। अन्य कुछ भी प्लानिंग कर सकते हैं, सूक्ष्म वतन में जाकर बाबा का वरदानी हाथ सिर पर लेना है, उनसे दृष्टि लेनी है, सच्चे दिल से उनका शुक्रिया करना है। इस तरह यह वरदानी समय सफल होगा। याद रहे... रात्रि को ही प्लानिंग करना आवश्यक है। उठते ही गीत भी सुन सकते हैं।

प्रश्न : बाबा हमें बाप समान बनने की व तीव्र पुरूषार्थ करने की बार-बार प्रेरणा दे रहे हैं। हम जानते हैं कि यह काम कठिन है। कोई सहज पुरूषार्थ की विधि जानना चाहेंगे।

उत्तर : यह सम्पूर्ण सत्य है कि अष्ट रत्न ही बाप समान बनते हैं, फिर सौ आत्माएं उनके समीप स्थिति तक जाती हैं। परन्तु हमें इस रेस में शामिल अवश्य होना है। आप पहला लक्ष्य बनायें कि मुझे योग का चार्ट चार घंटे तक पहुँचाना है। दूसरी बात - स्वमान का ज़्यादा अभ्यास करना है। आप अपने लिए कोई भी पांच स्वमान चुन लें और उनका बहुत अभ्यास करें। इससे देह भान व व्यर्थ संकल्प समाप्त होते जायेंगे। तीसरी बात - पवित्रता व निरहंकारिता पर ध्यान दें। पवित्रता में बहुत बड़ा सुख है इसे प्राप्त करते चलें। चौथी बात - यज्ञ व बाबा के लिए समर्पित भाव अपनायें, बस ये चार पुरूषार्थ करने से आप बाप समान बनते जायेंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com